बढ़ी हुअी जिम्मेदारी

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाअी देसाअी अंक ५२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २३ फरवरी, १९५२

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

बा

'हरिजन' के १५ वें भागका आखिरी अंक कस्तूरबा गांधीकी नवीं पुण्यतिथिके अेक दिन बाद ही प्रकाशित होगा। यह विरला संयोग है कि अिस साल बाकी मृत्युकी हिन्दू चान्द्र तिथि और ग्रेगोरियन सौर तिथि अेक ही दिन पड़ती है। आम तौर पर यह मौका हर अुन्नीसवें बरस ही आता है।

पार्वती और शिव तथा सीता और रामकी तरह बा और बापूकी भी हमेशा अेकसाथ चर्चा की जायगी और आदरके साथ दोनोंको याद किया जायगा। हम बाके जन्मकी निश्चित तिथि नहीं जानते; लेकिन अुन्होंने १९४३ की महाशिवरात्रीके दिन अपने प्रिय पतिकी गोदमें प्राण छोड़े थे। अिसके पांच साल बाद बापूका अवसान हुआ। लेकिन अितने थोड़े अर्सेमें भारतमें कितना फेरबदल हो गया! बा देशके अंग्रेज शासकोंके कैदीके रूपमें मरीं। वे बिना किसी अपराधके जेलमें रखी गअी थीं। अुस समय बासे कम गंभीर बीमारीवाले कअी राजनीतिक कैदी भी तन्दुरुस्तीके कारणसे कभी-कभी छोड़े जा रहे थे। लेकिन बाको नहीं छोड़ा गया। अुस समयकी सरकारने सूक्ष्म हिंसक तरीकेसे बाको लगभग मार ही डाला। बापूकी पत्नी होनेके कारण, जेलसे बाहर स्वतंत्र स्त्रीके रूपमें शांतिसे अुनके मरनेको भी अंग्रेज सरकार भारतमें ब्रिटिश हुकूमतके लिअे भारी खतरा समझती थी। सरकारने बाके शवको भी अुनके रिश्तेदारोंको सौंपनेकी अुदारता नहीं दिखाअी। जेलके अहातेमें ही अत्यंत सादे ढंगसे अुनका अंतिम संस्कार किया गया।

पांच सालके भीतर ही यह सारा दृश्य बदल गया। यह परिवर्तन अेक ही चित्रकी निगेटिव और पोज़िटिव फिल्मोंकी तरह था। ब्रिटिश सरकारकी हस्ती अभी भी कायम थी, लेकिन ब्रिटिश शासन खतम हो गया था। बापू ब्रिटिश शासनके दुश्मन थे, लेकिन ब्रिटिश सरकारके मित्र थे। और अब अुस सरकारने यह पूरी तरह महसूस कर लिया था। ब्रिटेनके राजाका प्रतिनिधि भारतमें रहा, लेकिन अुस पर राज करनेके लिअे नहीं। बाको तबके अंग्रेज शासकोंने सूक्ष्म हिंसाके जरिये मार डाला, बापूको अपने ही देशके अेक व्यक्तिने खुली हिंसाके जरिये मार डाला। अुनका जिस ढंगसे अन्तिम संस्कार हुआ, वह बाके अन्तिम संस्कारसे हर बातमें अुलटा था। खुद गवर्नर जनरल अुसमें मौजूद थे और जब तक बापूका शरीर आगमें जलता रहा, तब तक यमुनाकी रेत पर पल्थी मारकर बैठे थे।

जिस ढंगसे देशकी पीढ़ियां बा और बापूको याद करेंगी, वह भी संभवतः अेक-दूसरेसे अुलटा ही होगा। संभव है बाको वह भव्य और ठाटबाटवाली पूजा कभी न मिले, जो बापूको मिल सकती है। बापूकी पूजा अत्यन्त शाब्दिक और विधिवत् तो होगी, लेकिन जो चीज सिखाने और पैदा करनेकी अुन्होंने जीवनभर कोशिश की, अुसे शायद लोग दिनोंदिन भूलते जायंगे। अुनकी पूजा-अुपासनाको व्यवस्थित रूप देनेमें तो सारी दुनिया शरीक हो जायगी, लेकिन हृदयसे अुनका अनुकरण करनेवाले शायद मुट्ठीभर लोग ही रह जायंगे। लेकिन जहां कहीं बा जिन्दा रहेंगी, वहां वे सच्चे जीवन और आचरणमें ही जिन्दा रहेंगी। बाके नाम पर न तो कोअी मेले भरे जायंगे और न संगमरमर या कांसेकी मूर्तियां बनाअी जायेंगी अथवा छत्रियां खड़ी की जायंगी। लेकिन वे अैसे सेवकोंके जरिये, जो कभी प्रसिद्धिमें नहीं आना चाहेंगे या नहीं आयेंगे और कभी बाके नामका नाजायज फायदा नहीं अुठायेंगे, अेक हजारसे कम बस्तीवाले अुपेक्षित गांवोंके बच्चों और स्त्रियोंको हमेशा जीवन, स्वास्थ्य और शिक्षाका दान देती रहेंगी। और अेक भी व्यक्ति अुन्हें अैसी श्रद्धांजलि नहीं देगा, जो अुसके दिलसे नहीं निकलती। भारतमाताका सच्चा प्रतिरूप — बा दीर्घायु हों।

वर्धा, १५-२-'५२
(अंग्रेजीसे)

कि० घ० मशरूवाला

मेरा हिसाब

"'हरिजन' पत्रोंकी ग्राहकसंख्या" नामके पत्रकमें दिये हुअे आंकड़े देखते ही यह बताते हैं कि पिछले पांच साल और दो महीनोंमें 'हरिजन' पत्रोंके ग्राहक कैसे ज्यादा ज्यादा घटते गये। ता० १-१२-'४६ को गांधीजीने अस्थायी रूपसे अिन पत्रोंका काम मुझे और दूसरे तीन साथियोंको सौंपा था। अुस समय पत्रोंके कुल ग्राहक ५२००० थे। जब जून १९४७ में अुन्होंने फिरसे ये पत्र अपने हाथमें लिये, तब सिर्फ ३४००० ग्राहक रह गये थे। अिस तरह हमने ६ महीनेके अर्सेमें लगभग ३३% ग्राहक खो दिये। अगले सात महीनोंके अुनके सीधे संपादनकालमें भी ग्राहकसंख्या घटती ही रही। यहां तक कि अुनके अवसानके समय यह संख्या घटकर २५००० से भी कम रह गअी। ट्रस्टने मुझे फिरसे पत्रोंके संपादनका काम हाथमें लेनेको कहा, अुससे पहले अिनका प्रकाशन तीन महीनोंसे ज्यादा अर्से तक बन्द रहा। अिस दरमियान लगभग ८००० ग्राहक और कम हो गये। अिस तरह जब मैं अिन पत्रोंका संपादक बना, तब अिनके कुल ग्राहक १६७५० रह गये थे। अपने संपादनकालके पहले डेढ़ सालमें मैंने अेक-तिहाअी ग्राहक और खो दिये, जिसके फलस्वरूप १०८६४ ग्राहक रह गये। अुसके बाद भी ग्राहकसंख्या घटती रही, हालांकि अुसकी गति धीमी थी। ता० १-२-'५२ को तीनों पत्रोंके कुल ग्राहक केवल ९००० रह गये। मेरे संपादक बननेके बादसे लेकर आज तकमें ७७५० से ज्यादा ग्राहक घट चुके हैं।

बिलकुल साफ शब्दोंमें नम्रताके साथ मुझे यह स्वीकार करना चाहिये कि यह सब अिस बातका सबूत है कि जनता मेरे संपादनको पसंद नहीं करती। मेरे मित्र और प्रशंसक विश्वास दिलाना चाहते हैं कि मेरा यह अनुमान गलत है। दरअसल आर्थिक मन्दीके कारण 'हरिजन' पत्रोंकी ग्राहकसंख्या अितनी घट गअी है। संभव

www.vinoba.in

है यह भी अिसका अेक कारण हो। लेकिन अिससे अिस हकीकतमें कोअी फर्क नहीं पड़ता कि यह बहुत भारी नुकसानका हिसाब है।

शुरूमें ट्रस्टी लोग यह चाहते थे कि मैं केवल 'हरिजनबंधु' का संपादक बना रहूं, क्योंकि अुस पर वे थोड़ा घाटा सह सकते थे। लेकिन गुजरातमें न रहनेके कारण मैं यह जिम्मेदारी लेनेको तैयार नहीं था।

अिसके फलस्वरूप ट्रस्टको तीनों पत्र बन्द करनेका फैसला करना पड़ा।

वर्धा, १४-२-'५२ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

देहाती स्वराज्य कैसे मिले?

[कार्यकर्ता शिविरमें ता० ५-११-'५१ को दिया हुआ व्याख्यान।]

कभी-कभी अीश्वरका भी सजा करनेका अेक विशेष तरीका होता है। वह यह है कि अिन्सान जो काम करना पसन्द नहीं करता, वही अुसे करना पड़ता है। मैं हमेशा यही पढ़ता आया हूं तथा मैंने यही संस्कार कर लिया है कि आदमीको परोक्षवादी नहीं परन्तु प्रत्यक्षवादी होना चाहिये। जो अनुभव किया है, वही कहना चाहिये। पर आजकल कुछ अैसे प्रसंग आते हैं कि जिसके बारेमें मुझे कुछ अनुभव नहीं है, अुसीके बारेमें कुछ कहना पड़ता है।

जबसे मैंने 'हरिजन' पत्रोंके संपादनका भार अपने अूपर लिया, तबसे लोग अैसा कुछ मानने लगे हैं, जैसे मुझे हर चीजका ज्ञान हो। पर वस्तुस्थिति वैसी नहीं है। देहातोंका मुझे प्रत्यक्ष अनुभव नहीं-सा है। न मैं कहीं जा ही सकता हूं। आप लोगोंसे मुझे देहातोंका ज्ञान कुछ कम ही है। पहले कभी मैं देहातोंमें गया हूंगा, पर प्रत्यक्ष काममें नहीं पड़ा। जो कुछ चिट्ठी-पत्री मुझे मिलती है या जो लोग मुझे मिलने आते हैं, अुनसे मिली जानकारी पर ही मैं अपना सारा कारोबार चलाता हूं। पर आपकी स्थिति वैसी नहीं है। आप तो कअी सालोंसे देहातोंमें काम कर रहे हैं। अतः आपको देहातका प्रत्यक्ष ज्ञान है। अितना होने पर भी आप मुझे पूछते हैं कि देहातोंमें किस प्रकार काम किया जाय? तब मुझे परोक्ष रूपसे ही जवाब देना पड़ता है। शायद मेरा अुत्तर ठीक न भी हो।

मैं तो यह देखता आया हूं कि शिविरोंका काम कअी वर्षों पहलेसे चल रहा है। बापूने भी अिस प्रकारके शिविर चलाये थे। अिस प्रकारके शिविरोंसे थोड़े दिनोंमें कअी लोगोंसे सम्पर्क होता है, परिचय होता है, सामूहिक जीवनकी तालीम मिलती है। वैसे तो जेलोंमें भी सामूहिक जीवन रहता है, पर वह बंधनका होता है। वहां जो अनुभव आता है, वैसी यहांकी बात नहीं। यहां तो लोग स्वेच्छासे आते हैं। सभी प्रांतोंके लोग अेकत्र हो जाते हैं। यह अेक तरहसे ठीक ही है। आज हरअेक प्रांत अलग-अलग राज्य बन गया है। जहां वैसा नहीं है, वहां अुसके निर्माणके लिअे आंदोलन चल रहा है। अैसी परिस्थितिमें अैसे शिविरोंमें सभी प्रांतोंके कार्यकर्ताओंका अिकट्ठा होना, अेकत्र रहना अत्यन्त अुपयुक्त है। यह अेक बड़ी चीज है। बापूकी कल्पना थी जंगम युनिवर्सिटीकी, घूमते-फिरते विश्वविद्यालयकी। अैसे विश्वविद्यालयोंमें जो अनुभव और ज्ञान मिलता है, वह आप पांच साल तक युनिवर्सिटीकी पढ़ाअी करके भी प्राप्त नहीं कर सकते। क्योंकि जो काम आपको करना है, वह आप यहां अपने आप कर लेते हैं। अैसे काम करते वक्त आप अपने गांवोंकी परिस्थितिसे भी मिलान करते जाते हैं। वैसा युनिवर्सिटीमें नहीं होता। अतः यह महत्त्वकी चीज है। यहां शिविरमें आप जो शिक्षा पायेंगे, अुसको सरकार महत्त्व नहीं देती। पर असल स्वराज्य तो आप ही लोगोंके जरिये स्थापित होगा। आज सभीको असंतोष है। स्वराज्यका यह पांचवां साल है। बापूको गये भी चार साल पूरे हो गये। पर हमने जो अुम्मीद रखी थी, वह सिद्ध नहीं हो रही है। कब होगी अुसका भी हमें पता नहीं। नये चुनावोंमें कोअी भी पक्ष आवे, बहुत करके कांग्रेस ही आयगी, परंतु कोअी दूसरा पक्ष भी आवे तो भी हमारे कार्यक्रमकी दृष्टिसे कोअी फर्क नहीं होगा, अैसी मायूसी भी आप लोगोंके दिलोंमें आ सकती है।

बापू तो कहते थे कि हमारा स्वराज्य विलायतके कानूनसे नहीं बनेगा। वैसे ही हमें यह भी समझना होगा कि देहातियोंका स्वराज्य दिल्लीसे नहीं मिलेगा; न बम्बअी, कलकत्ते, नागपुरसे। वहां कुछ कानून तो अवश्य बनेंगे, पर वे सब किस तरहसे देहात, प्रांत आदि केन्द्रीय सत्ताके बंधनमें रहें, अिसी दृष्टिसे बनाये जायेंगे। पर हमें तो देहातोंको स्वाधीन बनानेवाला स्वराज्य चाहिये। देहातके बंधनमें केन्द्र चले, केन्द्रके बंधनमें देहात नहीं। अिसलिअे हमें देहातोंमें बसकर देहातियोंकी सूझ और बुद्धिको बढ़ाना है। अगर हम सोचें कि दिल्लीमें तो पं० जवाहरलालजी और बाबू राजेन्द्रप्रसाद जैसे अनेक लोग हैं, जिन्होंने बापूके साथ प्रत्यक्ष काम किया है। दिवाकरजी तो गांधी-सेवा-संघके सदस्य थे। तो भी अुनसे कोअी अुपयुक्त बात नहीं बन पाती। क्योंकि वे स्वयं आजाद नहीं हैं। शासन-तंत्र तो अुसी ढांचे पर है, जो पहले था। ब्रिटिश गवर्नर जनरलकी जगह राजेंद्रबाबू बैठे। अुनकी जैसी कार्यकारिणी थी वैसी ही आज भी है। पहलेके ही आअी० सी० अेस० अधिकारी आज भी मौजूद हैं। अितना ही नहीं, वे पुरानी ही पद्धतिसे काम भी कर रहे हैं। वे विद्वान हैं, पर अुनकी पढ़ाअी युरोपके यंत्रवाद पर आधारित है। यह विद्या कामकी तो जरूर है, पर अिसका फायदा पहले शहरोंको मिलता है और बादमें देहातोंको। जैसे भगवानको बड़ा भोग लगता है, तो पहले पुजारी और बादमें अुस मंदिरके ट्रस्टी अुसका बड़ा हिस्सा पाते हैं और बची-खुची थोड़ीसी शक्कर आम जनतामें बंट जाती है; अुसी प्रकार दिल्ली और अन्य शहरोंमें जो कुछ होगा, अुसका लाभ (थोड़ा) देहातोंको मिल जायगा। जैसे थोड़ा सस्ता तेल, वनस्पति, कपड़ा, सिनेमा और बाटाके जूते। यह थोड़ासा प्रसाद ही है। लेकिन बड़ा प्रसाद तो शहरके अुद्योगपतियोंको ही मिलता है। पर हमको तो देहातोंको बढ़ावा देना है। अिसके लिअे कअी सोचते हैं कि हम पार्लमेंटमें जावें। वहां बहस करें, सरकारसे काम करावें और कानून बनवावें। अितनी सिरपच्ची अुनसे करनेके बजाय हम देहातियोंसे संपर्क करेंगे, तो वे जल्दी समझ जावेंगे। सब सुधार कानूनसे नहीं हो सकता, क्योंकि देहातोंके लोग कानूनोंके प्रति अुदासीन रहते हैं। कुछ भी कानून बनें, वे अपना रवैया छोड़ते नहीं। मैंने देखा कि हमारी कोअी चीज देहात तक नहीं जा सकती। अंग्रेज सरकार भी देहात तक नहीं पहुंच सकी। क्योंकि हमारे खूनमें स्वभावतः असहयोगकी भावना है। जो चीज अुन्हें पसन्द नहीं, अुसका विरोध करनेके लिअे वे सभा नहीं बुलाते, आंदोलन नहीं अुठाते; केवल अुसकी अुपेक्षा करके अुसे बेकार कर देते हैं। अिस असहयोग-वृत्तिमें लाभ भी है, हानि भी। अिसका अुपयोग करके अगर हम अपनी बात देहाती लोगोंको समझा दें कि कताअी, घानीका तेल आदि चीजें देहातके अुपयोगकी हैं तथा अपनी जरूरतके अनुसार अनाजका संग्रह रखा जाय, तो वे बातें आसानीसे अमलमें आ सकती हैं। अगर गांवका निश्चय हो जाय कि मिलका कपड़ा या वनस्पति गांवमें कतअी नहीं आये, तो गांवका कच्चा माल यानी कपास, तिलहन आदि देहातोंके बाहर जा ही नहीं सकते। देहातोंका सच्चा स्वराज्य हासिल करना है, तो अुन्हें अिस बारेमें समझाना होगा और बताना होगा कि अपने गांवमें वे अपना राज्य कायम करें। स्वराज्य देहातोंका है, हरअेकका है, यह बात अगर देहाती समझ लेंगे, तो वे लगनसे काम कर सकेंगे।

www.vinoba.in

पर पाया तो यह जाता है कि लोग बुद्धिसे अिन चीजोंको मान लेते हैं, अुनको अिसकी सत्यता जंचती भी है, पर किन्हीं कारणोंसे शारीरिक या अन्य प्रकारका कोअी काम अुनसे नहीं बन पाता। लोग मानते हैं कि सफाअी होनी चाहिये। पर सुबह काम कौन करे? चरखा चलाना मान तो लिया; पर विचार करते हैं, आज सोमवार है अगले रविवारसे शुरू करेंगे। अिस प्रकार लोगोंका टालनेका स्वभाव है। आज विचार करते हैं और भविष्यमें कभी आचरण करनेकी बात करते हैं। अिसमें कौनसी त्रुटि है, अिस पर कभी विचार किया है? यह त्रुटि सबमें है। अिसलिअे बापू कहते थे: "आज ही करो।" बापू पूछते कि अमुक जगह जाना है, क्या तुम जा सकते हो? हमने हां कह दिया। तो टाअिम टेबल निकालकर कहा कि अभी सातकी ट्रेनसे चले जाओ। हमने तो वैसा समझा नहीं था। माना था कि जाना है यानी कभी दो-तीन दिनमें भी जा सकते हैं। पर अितनी जल्दी जानेकी कल्पना नहीं की थी। अिसका क्या कारण है? बुद्धिमें बात जंचने पर भी अैसा क्यों होता है?

हम रोज गीता पढ़ते हैं। अुसमें आपने अठारहवें अध्यायमें देखा होगा कि बुद्धिके तीन प्रकार बताये गये हैं। और धृति भी तीन प्रकारकी बताअी है। धृतिका अर्थ है निश्चयको पकड़ रखना और अुस पर दृढ़तासे अमल करना। मतलब यह है कि अपने निश्चयों पर अमल करनेकी ताकत चाहिये। धृति यानी धीरज रखकर किसी बात पर दृढ़ रहना। परन्तु हमारे देशमें अिस धृतिकी तालीम नहीं दी जाती। बड़े-बड़े संतोंका भी ध्यान अिस पर नहीं गया। शायद अिसका कारण यह भी होगा कि स्वभावतः वे स्वयं धृतिमान थे। पर यह बचपनसे आदत डालनेकी बात है। जो काम करना है, वह संकल्पपूर्वक, व्रतपूर्वक करना चाहिये।

लोग कहते हैं व्रत तो लिया था पर अब छूट गया। अिसका अर्थ ही यह है कि हममें धृतिका अभाव है। अेक चीज अगर बनानी है, तो हमें अुस पर दृढ़तासे अमल करना होगा। यही धृति (पावर ऑफ अॅप्लीकेशन) है। यह क्या तो देहातमें और क्या शहरोंमें, कम ही दिखाअी देती है। अिसलिअे यह चीज अुनमें पैदा करनी होगी। यह अुनको काममें लगाकर ही हो सकता है। मां लड़कीसे कहती है, चार बजे सबेरे अुठो और लड़की भी यह बात मानती है। पर दूसरे दिन अुस समय अुठ नहीं सकती। मां जब पुकारती है, तब कहती है कलसे अुठूंगी, आज सोने दे। मां कबूल कर लेती है और कहती है कलसे अुठना। अिसके बजाय अगर वह यह कहे: "नहीं, आजसे ही अुठो, घंटेभर बाद फिरसे सो सकती हो", तो अुसे सबेरे अुठनेकी आदत पड़ सकती है। अिस चीजका देहातियोंके साथ काम करनेमें ध्यान रखना होगा।

शिविरका मुझे न तो अनुभव है, न मैं शिविरका जीवन ही बिता सकता हूं। अलग-अलग शिविरोंमें अलग-अलग व्यवस्था होती है। ८ बजेकी घंटी ८॥ बजे तक बजती है, छः बजेका भोजन ११ बजे तक बनता रहता है। यह धृति न होनेका लक्षण है। अिसलिअे संकल्प पर कायम रहना चाहिये। यह शिविरोंमें धृतिकी तालीम है।

आपमें से कअी लोग जेलोंमें गये होंगे। बहुतोंको 'सी' क्लासका अनुभव होगा। आपने देखा होगा कि वहां किस प्रकार नियमित जीवन रहता है। आपमें से कअियोंने सोचा भी होगा कि बाहर जाने पर वैसा ही करेंगे। पर वैसा कुछ होता नहीं। अिसका कारण यही है कि जेलका नियमित जीवन बंधनसे आया था, धृतिसे नहीं। यह बात आप समझ लेंगे, तो अिससे आप देहातियोंके जीवनमें परिवर्तन ला सकेंगे।

कि० घ० मशरूवाला

'हरिजन' पत्रोंकी ग्राहकसंख्या

अलग अलग अर्सेमें 'हरिजन' पत्रोंकी बिक्री बतानेवाला पत्रक

अर्सा	तारीख	हरिजन	ह० बंधु	ह० सेवक	ह० अुर्दू	कुल
फरवरी १९४६ में 'हरिजन' पत्रोंका प्रकाशन पुनः चालू होनेके बाद, जब ये पत्र सबसे ज्यादा लोकप्रिय थे। . . .	१७-३-'४६	३८,२५३	२२,३६५	११,८५२	. . .	७२,४७०
जब गांधीजी कुछ समयके लिअे 'हरिजन' पत्रोंकी जिम्मेदारी दूसरोंको सौंपकर श्रीरामपुरके लिअे रवाना हुअे थे। . . .	१-१२-'४६	२५,२७९	१५,९२९	१०,२४९	१,३६४	५२,८२१
जब गांधीजीने "मैंने कैसे शुरू किया?" नामक अग्रलेख लिखकर पत्रोंका काम फिरसे अपने हाथोंमें लिया। . . .	८-६-'४७	१५,३६४	११,२२३	६,९०९	६२९	३४,१२५
गांधीजीके सम्पादकत्वमें आखिरी अंक। . . .	२६-१-'४८	९,९६९	९,४४१	४,८६१	४७५	२४,७४६
भाग १२ के ५ वें अंकके समय, जब श्री किशोरलालभाअी संपादक थे। . . .	९-५-'४८	६,७०६	६,७८२	३,२७९	. . .	१६,७६७
	३१-१२-'४९	३,७८९	४,४९१	२,५८४	. . .	१०,८६४
	२८-२-'५०	३,५३९	४,४६६	२,६११	. . .	१०,६१६
	३१-८-'५०	३,२८३	४,१३२	२,४३७	. . .	९,८५२
	२८-२-'५१	३,१९१	४,२३१	२,२०६	. . .	९,६२८
	३१-८-'५१	२,९५३	३,९१७	२,२०८	. . .	९,०७८
	३१-१-'५२	२,९५८	३,९३८	२,२८०	. . .	९,१७६
	१-२-'५२	२,८४०	३,८९०	२,२७०	. . .	९,०००
विदेशोंमें	१-२-'५२	७७	११४	७	. . .	१९८

जीवणजी डा० देसाअी

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
२३ फरवरी १९५२

बढी हुअी जिम्मेदारी

नवजीवन ट्रस्टने अपना पहला प्रस्ताव रद्द करके 'हरिजन' पत्रोंको प्रयोगके रूपमें ६ माह तक चालू रखनेका निर्णय किया है। (ट्रस्टका नया प्रस्ताव अिसी अंकमें दूसरी जगह दिया गया है।) ट्रस्टके पहले निर्णयसे अनेक लोगोंको चोट पहुंची थी। 'हरिजन' पत्र पढ़नेवालोंको अैसा लगा था कि ग्राहक बढ़ानेके लिअे प्रयत्न करनेका अुन्हें मौका न देकर अुनके साथ अन्याय किया गया है। कुछ लोगोंको यह भी शक हुआ कि पत्रोंको बन्द करनेके पीछे आर्थिक नुकसानके अलावा दूसरे भी कारण रहे होंगे। आशा है ट्रस्टके अिस बदले हुअे निर्णयसे अुन्हें सन्तोष होगा।

मनुष्य-स्वभाव ही अैसा है कि जैसी परिस्थिति हो, अुसके अनुकूल वह अपने आपको थोड़े समयमें बना लेता है। खुद गांधीजीके बिना भी चला लेनेकी हमें अब आदत हो गअी है। अुनके अवसानके बाद कअी महीनों तक जिनकी आंखें रोज आंसू बहाये बिना नहीं रहती थीं, वे भी अब अपने कामकाजमें लगकर संसारका चरखा चलाते हैं। जिस तरह हम गांधीजीके बिना अपना काम चला लेते हैं, अुसी तरह यदि नवजीवन ट्रस्ट अपने निर्णय पर कायम रहता, तो 'हरिजन' पत्रोंके बिना भी चला लेनेकी दुनियाको आदत हो जाती।

लेकिन गांधीजीको गोली लगी, अुस वक्त अगर डॉक्टरोंने यह कहा होता कि कुछ नौजवान अपना हृदय, आंतें वगैरा अवयव देनेको तैयार हो जायं तो हम गांधीजीको फिरसे जिला देंगे, तो पचासों युवक और युवतियां अैसा करनेको तैयार हो जातीं और देशकी जनता आनन्दमें मग्न हो जाती। हमें गांधीजीके बिना भी रहनेकी आदत पड़ गअी है, अिसका यह मतलब नहीं कि प्रजाको गांधीजीकी जरूरत महसूस नहीं होती। जनताने जोरदार चर्चा करके पत्रोंको चालू रखानेका जो प्रयत्न किया, वह अुसके अुस प्रयत्नसे मिलता-जुलता है जो अुसने गांधीजीको सजीवन करनेके लिअे किया होता। लेकिन गांधीजी परमात्माकी कृति थे, अिसलिअे वह प्रयत्न असम्भव था, जब कि पत्र मनुष्यकी कृति होनेके कारण अिनके विषयमें यह संभव हो सका।

लेकिन अगर गांधीजीको जीवनदान देकर जिलाया गया होता, तो अुसके बाद अुन्हें अपनी जिम्मेदारी कितनी बढ़ी हुअी मालूम होती? और फिर अुनकी राह पर चलनेकी जनताकी जिम्मेदारी भी कितनी बढ़ गअी होती? और मान लीजिये कि गांधीजी या जनता अुस जिम्मेदारीको पूरा करनेमें असफल रही होती, तो जिन डॉक्टरोंने नौजवानोंके बलिदान लेकर गांधीजीकी आयु बढ़ानेकी मेहनत की होती, अुन्हें क्या कृतार्थता या सन्तोषका अनुभव होता?

यही विचार अिन पत्रोंको जीवनदान देनेके बारेमें लागू करना चाहिये। ट्रस्टका निर्णय बदलवाकर और अुससे पत्रोंको चालू रखनेका निर्णय करवाकर जनताने अपनी, मेरी और ट्रस्टकी भी जिम्मेदारी खूब बढ़ा दी है। मेरी लिखनेकी या सम्पादककी गादी पर बैठनेकी तमन्ना पूरी करनेके लिअे तो पहले भी ये पत्र नहीं चलाये जाते थे। जनता बापूके पत्रोंका प्रकाशन चालू रखना चाहती है, अैसा मानकर ट्रस्टने अुन्हें चालू रखना चाहा था और मैंने अुनके सम्पादनका भार अपने सिर लिया था। लेकिन अनुभवने बताया कि पत्र चालू रखनेकी जनताकी जितनी अिच्छा मान ली गअी थी, अुतनी दरअसल थी नहीं। वर्ना अुनकी ग्राहकसंख्या अितनी ज्यादा घट न जाती। धीरे-धीरे घाटेका आंकड़ा बढ़ता ही गया और अन्तमें ट्रस्टको मजबूर होकर पत्र बन्द करनेका निर्णय करना पड़ा।

अब चूंकि जनताकी मांगसे 'हरिजन' पत्र चालू रहते हैं, अिसलिअे जनता पर अुनकी रक्षा या सलामतीकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। केवल अिन पत्रोंके लिअे दान या चन्दा देनेसे, या घाटा पूरा करनेकी जिम्मेदारी अुठानेसे, या खुदके पढ़नेके लिअे अथवा दूसरोंसे पढ़वानेके लिअे जितनी प्रतियोंकी जरूरत हो अुससे ज्यादा प्रतियां खरीदने भरसे यह जिम्मेदारी पूरी हुअी नहीं मानी जायगी। जो पढ़ना या सुनना न चाहें, अुन पर अिन पत्रोंको जबरन थोंपना ठीक नहीं। पढ़ने-पढ़ानेके लिअे जो अिन्हें खरीदें, वे ही सच्चे ग्राहक कहे जा सकते हैं। अिसलिअे जनताको चाहिये कि वह अिन पत्रोंके सच्चे पढ़नेवाले या पढ़कर सुनानेवाले लोग पैदा करे। जिन्हें ये महंगे पड़ते हों, अुनके लिअे कोअी मित्र अपनी जेबसे चन्दा भरे, यह बात अलग है। लेकिन अैसे पाठक भी ज्यादातर अुसे खुद ही खोजने चाहियें। अगर वह खुद खोजकर अैसे लोगोंके नाम भेजे, तो ही वह 'हरिजन' पत्रोंका सच्चा प्रचारक कहा जायगा। जिन-जिन लोगोंने अिन पत्रोंके चालू रहनेकी अुत्सुकता और चिन्ता बताअी है, अुन पर यह जिम्मेदारी आ जाती है। अिस सम्बन्धमें अनेक मित्रों और संस्थाओंने स्वेच्छासे पूरी संख्यामें पत्रोंके नये ग्राहक बना देनेकी जो तैयारी दिखाअी है, अुसकी मैं खूब कदर करता हूं। यह तारीफकी बात है, परन्तु मैं चाहता हूं कि सारे भारतमें अिन पत्रोंके ग्राहक बढ़ें। स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा अिन पत्रोंके जो बंगाली, तेलगू तथा दूसरी भाषाओंके संस्करण निकाले जाते हैं, अुनके बारेमें भी अैसे ही प्रयत्न किये जाने चाहियें।

ट्रस्टके अिस निर्णयसे मेरी जो जिम्मेदारी बढ़ गअी है, अुसका विचार करने पर तो दिमाग थक ही जाता है। मेरा शरीर और अुसके कारण दिमाग भी दिनोंदिन अितना भारी बोझ अुठानेके लिअे अशक्त बनता जाता है। अैसा होते हुअे भी मेरे सम्पादकत्वमें ही अिन पत्रोंके चालू रहनेकी अपेक्षा रखना मुझे परेशानीमें डाल देता है। अेक तरफ पाठक, मित्र, सहायक, सरकारी अफसर तथा रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी संस्थायें, कांग्रेस और दूसरी राजनैतिक पार्टियां—सब मेरे लिअे जो सद्-भावना और सहानुभूति दिखाते हैं, अुसके लिअे मैं कृतज्ञता और सन्तोष अनुभव करता हूं; लेकिन दूसरी तरफ यह जिम्मेदारी अुठानेकी अपनी अशक्तिके कारण चिन्ता भी होती है।

'हरिजन' पत्र सिर्फ आठ पृष्ठके तीन साप्ताहिक ही नहीं हैं। ये तो गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रमकी अेक खास संस्था जैसे बन गये हैं। ये अनेक प्रकारकी सार्वजनिक या व्यक्तिगत राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक कठिनाअियां पेश करनेकी तथा खुले या खानगी तौर पर अिनका हल पानेकी कोशिश करनेवालोंकी अदालत जैसे बन गये हैं। यह बोझ तो बढ़ता ही जाता है, लेकिन अुसे अुठानेकी मेरी शक्ति दिनोंदिन घटती जाती है। ये काम अैसे नहीं हैं कि दो सहायक बढ़ा देनेसे या अलग-अलग कामोंके लिअे योग्य सहायक-सम्पादक नियुक्त कर देनेसे मेरा भार कम हो जाय। लेखक अपने पर काबू रखकर ही मेरी मदद कर सकते हैं। जो पाठक मेरे प्रति प्रेम दिखा रहे हैं, वे पत्रोंके ग्राहक बढ़ानेकी जिम्मेदारी अुठानेके साथ-साथ अिस तरहकी मदद करनेकी अपनी जिम्मेदारीको भी समझें, अैसी मेरी प्रार्थना है।

नवजीवन ट्रस्टने 'हरिजन' पत्र बन्द करनेका निर्णय किया, अुसके कारण अुसकी जो बहुत अनुदार टीकायें की गअीं और अुसके बारेमें अत्यन्त अनुदार शंकायें अुठाअी गअीं, अुससे मुझे बड़ा दुःख हुआ है। गांधीजीने नवजीवन संस्थाको जन्म दिया, अुसे अपने लेखों, पुस्तकों

www.vinoba.in

वगैराके प्रकाशनका वाहन बनाया, अुन्होंने खुद संस्थाके अपनी पसन्दके ट्रस्टी नियुक्त किये और जब बदलनेकी जरूरत हुअी तब वे अुनकी सम्मतिसे ही बदलते रहे; अुन्होंने ही अिस संस्थाको अपने लेखों, पुस्तकों वगैराका कापीराअिट (मुद्रण अधिकार) सौंपा। तब गांधीजीके अिस कदमकी अिज्जत करना ही जनताका धर्म हो जाता है। अिसके कारण संस्थासे अीर्ष्या करना ठीक नहीं। जब किसी विषयमें शंका हो, तब सीधे ट्रस्टियोंसे ही पूछना चाहिये। लेकिन अुसके विषयमें कुतर्क करना और जनतामें गलत-फहमी फैलाना ठीक नहीं। गांधीजी द्वारा रखे गये विश्वाससे ट्रस्ट पर जो जिम्मेदारी आती है, अुसका अुसे पूरा खयाल है अैसी श्रद्धा रखकर यदि अुससे कोअी गलती होती हो, तो मित्रभावसे अुसे बताना अेक बात है, और कुतर्क करके अुसके बारेमें प्रजामें शंकायें पैदा करना दूसरी बात है। आज जब आपसी अविश्वासके बादल चारों ओर छाये हुअे हैं, तब यह जरूरी है कि हम सब अेक-दूसरे पर विश्वास करना सीखें। जब कि जनताने लोकमतका दबाव डालकर ट्रस्टसे अुसका निर्णय बदलवाया है और ट्रस्टने लोकमतका आदर करके अपना निर्णय बदल दिया है, तब जनताका यह फर्ज हो जाता है कि वह ट्रस्टको अपनी ही संस्था मानकर अुसकी प्रतिष्ठा बनाये रखे।

वर्धा, १६-२-'५२ कि० घ० मशरूवाला
(गुजरातीसे)

'हरिजन' पत्र चालू रहेंगे

ता० २-२-'५२ के 'हरिजन' पत्रोंमें यह जाहिर किया गया है कि अिन पत्रोंको मार्च १९५२ से लाचार होकर बंद करना पड़ेगा। अुसके बादके अंकमें श्री किशोरलालभाअीने अेक लेख लिखा, जिसमें अुन्होंने अिन पत्रोंकी ग्राहकसंख्या तथा अुनके कारण ट्रस्टको होनेवाले घाटे वगैराके बारेमें स्पष्टीकरण किया। और अुसमें पाठकोंसे अपील की कि जो लोग चाहते हैं कि 'हरिजन' पत्र चालू रहें, वे बड़ी संख्यामें अिनके ग्राहक बनकर सक्रिय सहानुभूति बतावें। अुस परसे जनतामें से भी अनेक लोगोंने अिस विषयमें जरूरी कदम अुठानेके बारेमें नवजीवन ट्रस्टको सलाह-सूचनायें दीं। नवजीवन ट्रस्टकी वार्षिक साधारण सभा ता० १५-२-'५२ के दिन हुई। अुसमें अिस सारे प्रश्न पर दुबारा विचार किया गया और ट्रस्टने अिस विषयमें नीचे लिखा प्रस्ताव पास किया है:

१. ग्राहक कम होनेके कारण 'हरिजन' पत्र बन्द करने पड़ें यह अुचित नहीं, अैसा समझकर कुछ लोगोंने ग्राहक बढ़ाकर पत्रोंको चालू रखनेमें सक्रिय सहायता देनेकी तैयारी दिखाअी है। ट्रस्ट अिसकी कद्र करता है।

केवल घाटेकी तरफ ही निगाह रखकर कुछ लोगोंने यह सुझाया है कि चन्दा अुगाहकर या दूसरी तरहसे यह घाटा पूरा किया जाय। कुछ लोगोंने यह भी कहा है कि पत्र अुन्हें सौंप दिये जायं। अिस तरहकी सलाह-सूचनाओंके विषयमें यह साफ कर देना जरूरी है कि पत्रोंको अगर पूरे ग्राहक न मिलें, तो अुसका अर्थ यह होता है कि अुनके पढ़नेवाले नहीं हैं; और अैसी हालतमें पत्र नहीं चलाये जाने चाहियें। गांधीजीने अपने पत्रोंके लिअे यह नीति तय की है। अुसी तरह ये पत्र दूसरोंको सौंपनेके बारेमें भी मर्यादा तो है ही। साधारण तौर पर देखा जाय, तो वे किसीको सौंपे नहीं जा सकते। अुसमें भी किसी व्यक्तिको या व्यवसायी संस्थाको तो हरगिज नहीं सौंपे जा सकते। नवजीवनकी तरह किसी संस्थाने यदि गांधीजीके सिद्धान्तोंको आदर्शके रूपमें स्वीकार किया हो, और अुसके कार्यक्षेत्रमें पत्र चलानेका काम आता हो, तो ही वैसी संस्थाको ये पत्र सौंपनेका विचार किया जा सकता है। और अुसी दृष्टिसे अंग्रेजी 'हरिजन' सर्व-सेवा-संघको सौंप देनेकी तैयारी दिखाअी गअी है।

कुछ लोगोंकी ओरसे यह सूचना आअी है कि मर्यादामें रहते हुअे भी विज्ञापन स्वीकार करके पत्र क्यों न चलाये जायं? अिस बारेमें ट्रस्टका दस्तावेज साफ शब्दोंमें कहता है: "संस्था द्वारा चलाये जानेवाले वर्तमानपत्रों, पुस्तिकाओं, पुस्तकों वगैरामें विज्ञापन न लिये जायं, साथ ही संस्थाके मुद्रणालयमें छापनेका अैसा काम न लिया जाय, जो संस्थाके अुद्देश्योंके खिलाफ हो।" अिसलिअे ट्रस्ट विज्ञापन लेकर भी पत्र नहीं चला सकता। वैसे ट्रस्ट यह रास्ता ले सकता है, अिसका अुसे पता था। परंतु जाहिर है कि ट्रस्टके दस्तावेजके स्पष्ट आदेशके सामने यह रास्ता अुसके लिअे बन्द है। सर्व-सेवा-संघने विज्ञापन न लेकर अंग्रेजी 'हरिजन' चलानेकी तैयारी बताअी है, अिसीलिअे वह पत्र अुसे सौंपा जा सका है।

पत्र बन्द करनेका निर्णय जाहिर होते ही जो पत्र और सूचनायें आअीं, अुन परसे लोगोंका यह आम खयाल मालूम होता है कि नवजीवन और अुसके पत्र अच्छी तरह अपना खर्च निकालते हैं और संस्थाको गांधीजीकी पुस्तकोंसे भी काफी बड़ा मुनाफा रहता होगा। यह बात सच्ची हकीकतसे बहुत दूर है। जनताको अिस विषयमें जरूरी जानकारी देनेके लिअे व्यवस्थापक सार्वजनिक रूपसे अेक वक्तव्य निकाले, जिससे ट्रस्टकी सच्ची हालतका जनताको खयाल हो सके।

२. ग्राहक पूरे नहीं हैं, पत्र घाटेमें चलते हैं यह ठीक नहीं और यह हालत सुधरनी चाहिये, अिस तरहकी चेतावनी पिछले दो सालमें कमसे कम तीनेक बार तो पाठकों और जनताको दी गअी थी। लेकिन अुसका कोअी अच्छा नतीजा नहीं निकला और ग्राहक दिनों-दिन घटते ही गये। यह हालत देखकर ही ट्रस्टने विचार किया कि पत्र बन्द किये सिवा कोअी चारा नहीं। यह विचार जाहिर करने पर जनताने अिस बारेमें जो दुःख प्रगट किया है और कुछ लोगोंने खुद मदद करके ग्राहक बढ़ानेका प्रयत्न करनेकी तैयारी बताअी है, अुसका ट्रस्ट स्वागत करता है और 'हरिजन' पत्रोंके बारेमें नया विचार करनेको तैयार होता है।

३. जैसा कि ता० २-२-'५२ के अंकमें बताया गया है, अंग्रेजी 'हरिजन' चलानेकी जिम्मेदारी सर्व-सेवा-संघ, वर्धा लेना चाहता है, अिस आशयका संघके मंत्री श्री शंकरराव देवका पत्र आया है। अुस बारेमें यह तय किया जाता है कि पत्रमें बताअी हुअी शर्तों पर मार्च १९५२ से अंग्रेजी 'हरिजन' संघको सौंप दिया जाय।

अगर आगे किसी कारणसे सर्व-सेवा-संघ यह जिम्मेदारी न ले सके, तो भी नवजीवन ट्रस्ट और छः माह तक यह पत्र चला देखे। अिस बीच अुसके अितने ग्राहक बढ़ जाने चाहियें कि वह पत्र अपना खर्च निकाल सके। अिसके लिअे अुसकी ग्राहकसंख्या, जो आज २८४० है, बढ़कर ६५०० हो जानी चाहिये। चार माहके बाद व्यवस्थापक अिस बारेमें ट्रस्टको रिपोर्ट पेश करे।

४. नवजीवन ट्रस्टके दस्तावेजमें अेक कलम है:

> "गुजराती भाषाके साधन द्वारा गुजरातके जीवनमें घुलमिल जानेकी और अिस तरह भारतकी शुद्ध सेवा करनेकी अिच्छा रखनेवाले संस्कारी और गुजराती भाषा परायण सेवकोंके जरिये लोकशिक्षाका काम करके भारतकी आजादी प्राप्त करनेके शांतिमय अुपायोंका प्रचार किया जाय।"

अिस ध्येयकी पूर्तिके लिअे:

> "अेक 'नवजीवन' पत्र चलाया जाय और अुसके जरिये शांतिमय स्वराज प्राप्त करनेका प्रचार-काम किया जाय।....."

अिस कलमकी रूसे ट्रस्ट गुजरातीमें पत्र चलानेकी अपनी जिम्मेदारीको समझता है। अुसी तरह राष्ट्रभाषामें चलाये जानेवाले 'हरिजनसेवक' के बारेमें भी ट्रस्ट मानता है कि वह भी चालू

www.vinoba.in

रखा जा सके तो अच्छी बात होगी। अिसलिअे तय किया जाता है कि ये दोनों पत्र मिलकर छः माहके अन्दर अपना खर्च चलाने जितने ग्राहक प्राप्त कर लेंगे, अैसा मानकर अिन्हें भी चालू रखा जाय। ट्रस्ट प्रजासे प्रार्थना करता है कि वह अिन दोनों पत्रोंके पूरी संख्यामें ग्राहक बनकर अुन्हें चालू रखनेमें ट्रस्टकी मदद करे।

अूपर कहे अनुसार दोनों पत्र मिलकर अपना खर्च निकाल लें, तो भी 'हरिजनसेवक' के बारेमें अेक खुलासा कर देना जरूरी है। 'हरिजनसेवक' (हिन्दी) की ग्राहकसंख्या आज २२७० है। दुःखकी बात है कि यह तीनों पत्रोंमें सबसे कम है। अगर यह संख्या घटकर १५०० के नीचे चली जाय, तो अुसका अर्थ यह होगा कि अिस पत्रको चालू रखने जितने ग्राहक अिसे नहीं मिलते। अिसलिअे अगर अिसकी ग्राहकसंख्या १५०० से नीचे चली जाय, तो 'हरिजनसेवक' (हिन्दी) बन्द कर दिया जाय और अकेला 'हरिजनबंधु' (गुजराती) चालू रखा जाय। ट्रस्टको आशा है कि अुस पर गुजराती पत्र चलानेकी जो खास जिम्मेदारी है, अुसे अदा करनेमें गुजराती प्रजा अुसकी मदद करेगी और अैसी हालत पैदा नहीं होने देगी कि अुसे बन्द करना पड़े।

१५-२-'५२ **जीवणजी डा० देसाअी**
(गुजरातीसे) व्यवस्थापक ट्रस्टी

मजदूरीकी प्रतिष्ठा

[दिल्लीमें १८ नवम्बर, '५१ को किशनगंजकी मजदूर-बस्तीमें प्रार्थना-सभामें प्रवचन करते हुअे विनोबाने मजदूरीके कामका मूल्य और अुसकी प्रतिष्ठा बढ़ाने पर विशेष जोर दिया।
—कि० घ० म०]

आज आप मजदूर भाअियोंके बीच मैं आ पहुंचा हूं, अिसकी मुझे खुशी होती है। जैसे आपको सुनाया गया है, मैंने मजदूरीके कअी काम अपनी जिन्दगीमें किये हैं। अितना ही नहीं, मजदूरकी हालत किस तरहकी होती है, अुस बारेमें मैं सोचता रहा हूं और अुसे सुधारनेके तरीके ढूंढता रहा हूं। तरीके तब तक मालूम नहीं होते, जब तक कि मजदूर जैसा पेशा अख्तियार नहीं किया जाता। मजदूरी-वाले काम अपनानेकी मेरी कोशिश रही है और अेक मजदूरके नाते ही मैं यहां पहुंचा हूं, मजदूरके ढंगसे ही आया हूं। मजदूर पैदल ही आता है, वैसे ही मैं भी मीटिंगके लिअे पैदल चलकर आया हूं। मजदूर ठीक समय पर आ सकता है, क्योंकि अगर वह देरीसे पहुंचे तो मिलका दरवाजा अुसके लिअे बन्द हो जाता है। वैसे ही मैंने भी ठीक वक्त पर यहां पहुंचनेकी कोशिश की है। जो दो-चार शब्द मैं यहां कहूंगा, वे अैसे होंगे जैसे कि आपमें से ही कोअी आपसे कह रहा हो।

सब लोग जानते हैं कि हिन्दुस्तानमें मजदूरोंकी हालत अच्छी नहीं है। शहरके मजदूरोंकी पुकार तो लोगोंके कानों तक पहुंच भी जाती है, मगर देहातके मजदूरोंकी आवाज सुनानेवाला कोअी नहीं होता। अिसलिअे वह किसीके कानों तक नहीं पहुंचती। अिसलिअे अिन मजदूरोंकी हालत सबसे खराब है, अैसा आप कह सकते हैं। कुछ लोगोंकी हालत तो मजदूरोंसे भी खराब है। वे रोजीकी तलाशमें मारे-मारे फिरते हैं, दर-दर भटकते हैं। अिसलिअे हिन्दुस्तानमें अेकसे बढ़कर अेकका दुःख है। दुःखियोंकी अेक बहुत भारी जमात है। अितनी बड़ी जमात देशमें दुःखी रहे, यह देशके लिअे अच्छी बात नहीं है।

यह दुःख क्यों भुगतना पड़ रहा है? हिन्दुस्तानमें सदियोंसे कामको नीचा माना गया है। हिन्दुस्तानमें कामके बंटवारे किये गये। चन्द दिमागी काम करनेवाले लोगोंको सबसे अव्वल दर्जा दिया गया। राजका कारोबार चलानेवालोंको दूसरा, व्यापार और कृषि करनेवालोंको तीसरा और मल-मूत्रकी सफाअी करनेवालोंको सबसे नीचा दर्जा दिया गया। अैसे दर्जे पर दर्जे बन गये। जो जितना अुपयोगी काम करे, अुसकी अिज्जत बढ़नेके बजाय घटती गअी। जो हाथसे मेहनत नहीं करता, अुसे अिज्जत ही ज्यादा नहीं, बल्कि पैसा भी ज्यादा दिया जाने लगा।

अेक जमाना था जब ब्राह्मणको अिज्जत मिलती थी, मगर पैसा नहीं। आज तो अिज्जत और दौलत ज्यादासे ज्यादा अुसको मिलती है, जो पैदावारका काम कमसे कम करता है। समाजमें नीची जमातें अपना काम करती रहीं, मगर अुन्हें सम्मान हासिल नहीं हुआ। किसान खेती करता रहा, भंगी सफाअीका काम करता रहा और बुननेवाला बुनता रहा। मगर अुनके दिमागमें खयाल यही रहा कि वे लाचारीसे अपना काम करते हैं। अगर अुससे मुक्ति मिल सके तो अच्छी बात हो। समाजमें अैसी वृत्ति पैदा हो गअी कि जो श्रम करनेवाले हैं, अुनको श्रम न करनेवालोंसे हीन माना जाने लगा और कामकी अिज्जत ही कम नहीं हुअी, बल्कि अुसकी कीमत भी घट गअी। यही कारण है कि जब परदेशी लोग आये, तो अुनका काम यहां जम गया। यहांके जो लोग मेहनत करने-वाले थे, अुनका अुन्हें सहारा मिल गया। यहांके व्यापारियोंको जीत लिया और बादमें राज भी ले लिया। क्योंकि आम लोगोंको अिस बातकी फिक्र नहीं थी कि राज किसका है। देशके बचावमें किसीकी दिलचस्पी नहीं रही थी। अंग्रेज यहां आये और थोड़े परिश्रमसे ही अुन्होंने राज हासिल कर लिया। यह सारे हिन्दुस्तानका अितिहास हमारे सामने है।

मजदूरोंकी हालत

समाजमें छूत-अछूतका भेद भी बढ़ता गया और अिस प्रकार समाजका सारा ढांचा बिलकुल बिगड़ गया। गांधीजीने जिन्दगीभर काम करके लोगोंको सबक दिया, मगर तो भी आज तक मजदूरीके कामके लिअे प्रतिष्ठा या अिज्जतकी भावना पढ़े-लिखे लोगोंके दिलोंमें नहीं है। कीमत भी मजदूरीकी कम मिलती है। यह हालत हमको मिटानी है। जो पैदावारका काम करता है, वह हिन्दुस्तानका अच्छा नागरिक माना जाय, वह अपना सिर अूंचा करके चल सके, अुसके जीवनमें अैसा आनन्द दाखिल हो कि जिससे वह अपनेको सुखी समझ सके। मैंने जो कदम या हरकत या आंदोलन अुठाया है, वह अिसी दृष्टिसे अुठाया है। जो भूमिहीन हैं, अुन्हें जमीनें दिला रहा हूं। ये जमीनें मैं भीखके तौर पर नहीं मांगता, बल्कि हकके तौर पर मांगता हूं। जो जमीन पर काश्त करता है वह जमीनका मालिक न हो और जो काश्त नहीं करता वह जमीनका मालिक हो, तो फिर देशमें पैदावार कैसे बढ़ेगी?

जिस जमीनको भगवानने पैदा किया, अुसका कोअी मालिक नहीं हो सकता, अुसके चाकर हो सकते हैं। अिसलिअे मालिक बननेका दावा गलत है। भूमिहीन लोगोंका हक कबूल करके घरके लड़केकी तरह अुनको जमीन दे दी जाय, कोअी अुपकार समझकर नहीं। वे यह मान लें कि जो अन्याय अब तक हो रहा था, अुससे वे बरी हो रहे हैं। मेरे जैसा जमीन मांगने आता है, तो अपना भाग्य समझो कि आपका बोझ कम करनेवाला आया है। जब किसीके शरीरका वजन बहुत बढ़ जाता है, तो अुसकी सेहत खतरेमें होती है। अगर अुसको अपनी सेहत सुधारनी है, तो डॉक्टर कहेगा कि वजन कम करो। दूध-घी कम खाओ। तो वह डॉक्टर दुश्मन नहीं है, दोस्त है। मना करने पर भी मिठाअी खाता रहेगा, तो अुसकी जिन्दगी खतम हो जायगी। मरनेवाले तो सभी हैं, अिसलिअे मरनेका दुख नहीं। पर दुख बहुत झेलोगे। डॉक्टरकी राय मानकर कोअी दूध छोड़े, तो क्या वह त्यागी और

www.vinoba.in

तपस्वी गिना जायेगा? क्या वह समझदार गिना जायगा? अुसी प्रकार मैं जमींदारोंको समझाता हूं। लोग समझ रहे हैं और दे रहे हैं। कुछ लोग नहीं देते, तो अुसकी मैं फिक्र नहीं करता। क्योंकि वे कल देनेवाले हैं। अेक विचारका बीज हमने बोया, तो वह आज नहीं तो कल जरूर अुगनेवाला है। अुगे बिना नहीं रहेगा। मैं प्रेमसे समझाता हूं। मेरा हक मांगता हूं। लोग दे रहे हैं। अिससे अेक हवा बन रही है जिससे न केवल भूमिहीनोंकी ही तरक्की होगी, बल्कि सब मजदूरोंकी भी तरक्की होगी। लोग पूछते हैं कि देहातके मजदूरोंका काम तो आप करते हैं, लेकिन शहरके मजदूरोंकी हालत अिससे कैसे सुधरेगी? मैं कहता हूं कि मैं सब मजदूरोंकी सेवा करनेवाला हूं। जो काम मैंने अुठाया है वह कामयाब हो जाय, तो मजदूरोंकी अिज्जत बढ़ेगी। लोग भी अुनके साथ काम करने लगेंगे। वेतन वगैराके बारेमें भी अुचित सुधार होगा। 'अेके साधे सब सधे।'

मजदूरोंका शिक्षण

आज बहुत करके मजदूरोंके लिअे अितना ही आंदोलन किया जाता है कि अुनकी तनखाह वगैरा बढ़ाअी जाय। जिस स्थितिमें वे हैं, अुसमें थोड़ासा परिवर्तन हो जाय। लेकिन होना यह चाहिये कि मिलें मालिक और मजदूरोंके साझेमें हों। साल भरमें जो कुछ मुनाफा हो, अुसका कुछ हिस्सा धंधेके बढ़ावेके लिअे रहे। कुछ मालिकको और कुछ मजदूरोंको दिया जाय। मालिकको कितना हिस्सा दिया जाय, यह मालिक नहीं कहेगा। वह कहेगा, मैंने तो मेरी बुद्धि लगाअी है। पूंजी मेरे पासकी है; लेकिन मेरी नहीं है। पूंजी देशकी है और मालिक भी देशका है। वह अेक मैनेजर है, अुसने अकल लगायी है। अिसलिअे मजदूर अुसको जो देंगे, अुस पर अुसे संतुष्ट रहना चाहिये। अिस तरह मालिक करेगा, तो अुसका जीवन संतुष्ट होगा, सुखी होगा, मजदूर भी सुखी होंगे। कोअी पूछ सकता है कि अिस जमानेमें अिस तरह करनेवाले मालिक होंगे? मैं कहूंगा कि सब अेकदम तैयार नहीं होंगे, लेकिन अुनकी बुद्धिको समझाया जाय, तो कुछ मालिक जरूर तैयार होंगे। अैसे मालिकोंका जीवन आनंदमय होगा। सब अुनकी सेवा करनेको तैयार होंगे, सबका प्रेम अुन्हें मिलेगा। अैसा दृश्य दिखाअी देगा, तब अुनकी जातिके दूसरे लोग भी तैयार होंगे। मनुष्यके हृदयमें अच्छी भावनायें होती हैं। अिसकी अेक कसौटी तो यह है। आप यही देखिये कि जो मालिक है, अुसके भी बाल-बच्चे हैं। वह घरके लोगोंके साथ कैसा व्यवहार करता है? तो दीख पड़ेगा कि वह प्रेमसे रहता है। केवल निष्ठुरता ही अुसमें नहीं है, प्रेम भी है। केवल अितना ही है कि वह अेक प्रवाहमें बह गया है। अिसलिअे मजदूरोंके बारेमें अिस तरह नहीं सोचता। अेक गलत खयाल पैदा हुआ है कि सस्तीसे सस्ती चीज बाजारमें भेजनी चाहिये। और सस्ती चीज मजदूरोंको कम मजदूरी देकर ही हो सकती है। यदि अुसको यह दिखे कि पैसेसे सच्ची रक्षा नहीं हो सकती, प्रेमसे ही हो सकती है, तो वह समझ जायगा। अिसके लिअे मजदूरोंको भी जागृत होना चाहिये। जागृति तो मजदूरोंमें है। अुठते हैं, बीच-बीचमें हड़ताल भी करते हैं। लेकिन मेरा मतलब अिससे नहीं है। अुन्हें शिक्षण मिलना चाहिये। अुन्हें तालीम मिले। वे जो काम कर रहे हैं, अुसके अिर्द-गिर्दका सारा ज्ञान अुन्हें होना चाहिये। आज वे बुननेका काम करते हैं, लेकिन बुननेका विज्ञान नहीं जानते। माल कहांसे आता है, कहां बिकता है, यह नहीं जानते। अुनके लिअे अैसे स्कूल होंगे, जहां यह सब ज्ञान अुन्हें दिया जायगा। तो अुनकी कार्यशक्ति बढ़ेगी, अिज्जत बढ़ेगी और मालिकोंको लगेगा कि अिनको मिलका कारोबार भी सौंप दिया जा सकता है। अैसा कहते हैं कि मिल अेरियामें शराबबन्दी नहीं होनी चाहिये। मजदूर थककर आते हैं, तो शराब पीनेसे थकान अुतर जाती है। जैसे हम दिन भरके कामके बाद विश्रांतिके तौर पर रामनामे लेते हैं, तुलसी रामायण पढ़ते हैं, वैसे मजदूरोंके लिअे रामनामकी जगह शराबने ले रखी है। कभी लोग कहते हैं कि 'आप मजदूरोंके जितना श्रम नहीं करते, अिसलिअे आपको शराबकी जरूरत महसूस नहीं होती।' अेक शिक्षित भाअीने मुझे बड़ा लम्बा-चौड़ा पत्र लिखा था कि 'बिना अनुभवके आपको बोलना नहीं चाहिये। क्या आपने शराब चखी है? शराब चखी नहीं, तो अुसकी लज्जत आप क्या जानें?' यह तो अनुभवकी बात है कि जहां मजदूरोंके बीच शराब आयी है, अुसने अुनका नाश कर दिया है, और जहां शराबबन्दी हुअी है वहां मजदूरोंका जीवन सुधरा है। बंबअीका यही अनुभव है। मद्रासमें शराबबन्दी हुअी। अुसके बाद तहकीकात की गयी और मालूम हुआ कि मजदूरोंकी जिन्दगी सुधरी है। मजदूरोंकी स्त्रियां शराबबन्दीके लिअे आभार मानती हैं। आप लोगोंको मांग करनी चाहिये कि 'सरकार शराबबन्दी करे। हम पीना नहीं चाहते।' कोअी कहेगा कि दुकानें हों तो भी आप पीते काहेको हैं? अुसका अुत्तर आप यह दें कि हम अितने तपस्वी नहीं हैं कि मोहकी चीज सामने होते हुअे भी हम अुसमें न फंसें। शराबकी दुकानें देखकर हमें पीनेका मोह होता है। अिसलिअे शराबबन्दी होनी ही चाहिये।

मैंने अिस तरह दो बातें बताअीं कि मजदूरोंको अच्छी शिक्षा मिले, जिससे कि जो धंधा वे करते हैं अुसके माहिर बनें। और दूसरी चीज अुनका जीवन-सुधार हो और व्यसन दूर हों। यदि हम चाहते हैं कि मजदूर अच्छे कारीगर बनें, तो ये बातें आवश्यक हैं। फिर अुनकी ओरसे जो कुछ आवाज निकलेगी, वह मालिक प्रेमसे सुनेगा और अुसकी आंखें खुल जायेंगी। हृदय-परिवर्तन होनेके लिअे बाहरकी परिस्थितिका दबाव पड़ेगा। कअी लोग पूछते हैं कि हृदयसे ही सारा काम होगा? मैं कहता हूं जी हां, हृदय-परिवर्तन दो तरीकेसे होगा। विचार समझाकर और दूसरा परिस्थिति पैदा करके, जिससे कि वह करनेके लिअे लाचार हो जाय। अिस तरह मजदूरोंमें काम करना चाहिये। मजदूरोंकी प्रतिष्ठा बढ़नी चाहिये। जो मजदूरोंका हित करना चाहते हैं, अुनसे मैं कहूंगा कि अुन्हें मजदूरोंके साथ काम करना चाहिये, जिससे कि वे अुनकी दिक्कतें जान सकें। अिससे मजदूरोंकी प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी और गरीब श्रीमान हो जायंगे। श्रीमानोंका वजन अधिक है, वह घट जायगा और गरीबोंका कम है वह बढ़ जायगा। अभीका मेरा काम सफल हुआ, तो और काम मैं अुठाअूंगा।

अुत्तरकी दीवारें

लेखक: **काकी कालेलकर;** अनुवादिका: **शकुन्तला**

कीमत ०–१४–० डाकखर्च ०–३–०

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०–१२–० डाकखर्च ०–३–०

गुजरातीका नया प्रकाशन

विवेक अने साधना

लेखक: **केदारनाथ**

संपादक

किशोरलाल घनश्यामदास मशरूवाला

रमणीकलाल मगनलाल मोदी

की० ४–०–० डाकखर्च ०–१२–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

www.vinoba.in

टिप्पणियां

चुनावोंकी व्यवस्था

आम चुनावोंके मौके पर चुनाव व्यवस्था-तंत्र द्वारा किये गये प्रबंधकी और अुसमें काम करनेवाले कर्मचारियोंकी सचाअी और अीमानदारीकी चारों तरफसे, जिसमें हारे हुअे अुम्मीदवार भी शामिल हैं, जो तारीफ सुनी गअी, वह आम चुनावोंका सबसे संतोषजनक पहलू है। चुनाव कमिश्नर अितनी सुन्दर व्यवस्थाके लिअे और अुनके अफसर तथा सहायक योग्य और प्रामाणिक ढंगसे अपना कर्तव्य पूरा करनेके लिअे हमारे धन्यवादके पात्र हैं। अिससे मालूम होता है कि सरकारी नौकरियोंमें अैसे लोग काफी हैं, जिन पर भरोसा किया जा सकता है और जो सारे तंत्रको अूंचा अुठानेमें खमीरका काम कर सकते हैं। जीवनके हर क्षेत्रमें पाये जानेवाले अैसे ही प्रामाणिक और सच्चे लोगों पर शुद्ध व्यवहार आन्दोलनकी आशाका आधार है। मेरा हमेशा यह विश्वास रहा है कि केवल बीमारी और बुराअी ही अपनी छूत नहीं फैलाती। स्वास्थ्य और नैतिकताके लिअे भी शक्तिके साथ फैल सकना संभव होना चाहिये। विज्ञानने केवल बुरे कीटाणुओंकी ही खोज और अध्ययन किया है, यह अिस संबंधमें मनुष्यकी दोषपूर्ण दृष्टिका सूचक है।

अितिहासमें लिखा है और हमने अपने जमानेमें देखा है कि महान और साधु पुरुष अक्सर कैसे प्रचण्ड नैतिक आन्दोलन पैदा करते हैं और सैकड़ों व्यक्तियोंके जीवनमें अेकाअेक परिवर्तन कर देते हैं। बीमारी और बुराअीकी तरह स्वास्थ्य और भलाअीका भलीभांति अध्ययन नहीं किया गया है।

मुझे आशा है कि सरकारके चुनाव विभागने जो अच्छा अुदाहरण पेश किया है, अुसकी छूत आम जनता और दूसरे सरकारी विभागोंको लगेगी।

बम्बअी, ४-२-'५२ कि० घ० म०

(अंग्रेजीसे)

ठक्करबापा स्मारक कोष, दिल्ली

[ता० १९-१-'५२ तक अिकट्ठी हुअी कुल रकम]

संख्या	नाम	जमा हुअी रकम रु० आ० पा०
१.	आन्ध्र	५३५-०-०
२.	बंगाल	१६,६३६-०-०
३.	बिहार	१,३५७-०-६
४.	बम्बअी	१७,२१०-०-०
५.	दिल्ली	४,२७०-८-६
६.	गुजरात	६,११५-४-०
७.	हिमाचल प्रदेश और जौनसार बावर	४६६-०-०
८.	कर्नाटक	३५१-१२-०
९.	केरल	५-०-०
१०.	महाराष्ट्र	४३२-८-३
११.	मध्यभारत	१५,७४५-०-०
१२.	मैसूर	१०२-०-०
१३.	नागपुर, विदर्भ और महाकोशल	४,२३२-४-०
१४.	पंजाब और पेप्सु	४२९-४-०
१५.	राजस्थान	५०-०-०
१६.	सौराष्ट्र	६९७-८-०
१७.	तामिलनाड	२०५-०-०
१८.	अुत्कल	१००-०-०
१९.	अुत्तर प्रदेश	३३५-१२-०
	कुल रु०	६९,२७५-१३-३

दिल्ली, २५-१'-५२ डी० रंगैया

(अंग्रेजीसे) मंत्री

यह फन्दा ?

करीब अेक माह पहले अमेरिका और भारतके बीच अेक समझौता हुआ है, जिसके फलस्वरूप भारतको अपने विकासके लिअे ५ करोड़ डालरकी मदद अमेरिकाकी तरफसे मिली है। दुनियाके दूसरे सारे हिस्सोंमें अमेरिका अपना आर्थिक जाल फैलाता रहा है। ब्रिटेनने राजनीतिक साम्राज्यवादमें विशेष योग्यता प्राप्त की, जब कि अमेरिकाकी विशेषता आर्थिक साम्राज्यवाद है। क्या यह मदद विश्वकी समस्याओं पर अपनी स्वतंत्र राय जाहिर करनेसे हमें रोक देगी? हम सब तरहके प्रलोभनोंसे, "गांवों-शहरोंके विकास" के प्रलोभनसे भी, सावधान रहें।

केवल ५ करोड़ डालरकी मददसे सन्तोष न मानकर अमेरिकन राजदूत मि० चेस्टर बाअुल्स भारतकी 'अुन्नति'को आगे बढ़ानेके लिअे १०० करोड़ डालरका सुझाव रखते हैं। अमेरिकन 'निष्णात' भारतमें आने भी लगे हैं।

अिस सबमें मुझे बड़ा खतरा दिखाअी देता है। यह अमेरिकन प्रवेश अपने साथ व्यापारवाद और ट्रेक्टर लायेगा। अपनी खेतीको मशीनों और क्रूड आअिल पर निर्भर बनाकर हम शरीर, आत्मा और भावनासे भी अमेरिकाके गुलाम बन जायेंगे। बादमें अमेरिकन हमें जो कुछ करनेको कहेंगे, अुस पर यदि हम नाराज होंगे तो हमारी "अकल ठिकाने लानेके लिअे" अुन्हें केवल क्रूड आअिलका जत्था भेजना ही बन्द करना पड़ेगा। तब अपनी भुखमरीके कारण अुनकी अधीनता स्वीकार करनेके सिवा हमारे लिअे कोअी चारा नहीं रह जायगा। पिछली लड़ाअीसे पहले मद्रासके पासके कुछ जिलों कुछ खुशहाल किसानोंने अपने खेतोंमें सिंचाअीके लिअे क्रूड आअिलसे चलनेवाले पम्प लगा लिये थे। लड़ाअीके जमानेमें अुनकी आर्थिक व्यवस्था बिगड़ गअी, क्योंकि अुन्हें जरूरी क्रूड आअिल बिलकुल नहीं मिल सका। अुनमें से कुछ तो अिस कठिनाअीसे बरबाद भी हो गये।

हमारी अर्थव्यवस्थाको अैसी चीजोंकी बुनियाद खड़ा करना, जो हमारे देशमें नहीं हैं या जिन्हें वह पैदा नहीं करता, आत्मघाती कदम होगा। हम जापानके अनुभवसे लाभ अुठायें। पिछली लड़ाअीमें जापानके हथियार डालनेका कारण अणुबमका डर नहीं था; अुसका सच्चा कारण ग्रह था कि अुसके पास लड़ाअी चलानेके लिअे पेट्रोल नहीं रहा था। हिरोशिमाने तो अुसे अपनी लाज बचानेका मौका दे दिया। भले हम थोड़ी ही प्रगति क्यों न करें, हमें अपने पावों पर खड़े रहना चाहिये। अिस प्रगतिकी गतिको तेजीसे बढ़ानेकी कोअी भी कोशिश घातक साबित होगी। अितनी भारी कोअी भी विदेशी मदद, जिससे हम अपने आपको आसानीसे मुक्त नहीं कर सकते, अन्तमें हमारे गलेका फन्दा साबित होगी और हमारी नअी मिली हुअी आजादीको खतरेमें डाल देगी।

(अंग्रेजीसे) जो० कॉ० कुमारप्पा

विषय-सूची

		पृष्ठ
बा	कि० घ० मशरूवाला	४४१
मेरा हिसाब	कि० घ० मशरूवाला	४४१
देहाती स्वराज्य कैसे मिले?	कि० घ० मशरूवाला	४४२
'हरिजन' पत्रोंकी ग्राहकसंख्या बढ़ी हुअी जिम्मेदारी	जीवणजी डा० देसाअी	४४३
'हरिजन' पत्र चालू रहेंगे	कि० घ० मशरूवाला	४४४
मजदूरीकी प्रतिष्ठा	जीवणजी डा० देसाअी	४४५
यह फन्दा?	विनोबा	४४६
टिप्पणियां:	जो० कॉ० कुमारप्पा	४४८
चुनावोंकी व्यवस्था	कि० घ० म०	४४८
ठक्करबापा स्मारक कोष, दिल्ली	डी० रंगैया	४४८

www.vinoba.in